पुरानी बीमारियों से ग्रसित पाठ्यपुस्तकें

लतिका गुप्ता

भारतीय स्कूलों में अंग्रेजी की पढ़ाई का विश्लेषण सिर्फ एक अकादमिक विषय के रूप में नहीं हो सकता। उसके लिए कई और कारकों की समझ बनानी जरूरी है। उनमें से कुछ मुख्य हैंः लोगों की आकांक्षाएं, मातृभाषा एवं स्थानीय भाषा के पढ़ाए जाने का तरीका एवं विषय वस्तु को देखने का अकादमिक नजरिया जिस पर संस्कृति का प्रभाव पड़ता है। भाषा चाहे कोई भी हो और दुनिया के किसी भी भाग में पढ़ाई जा रही हो, उसके शिक्षण को सांस्कृतिक-सामाजिक संदर्भ में अवस्थित देखा जाना चाहिए। अंग्रेजी के शिक्षण पर केंद्रित राष्ट्रीय फोकस समूह के पर्चे के अनुसार, ''भाषा की पाठ्यचर्या के लक्ष्य द्विआयामी होते हैं, बुनियादी दक्षताओं को सीखना, जैसे कि मातृभाषा सीखते समय स्वाभाविक रूप से होता है, और अमूर्त चिंतन एवं ज्ञान अर्जन के लिए भाषा का एक निमित्त के रूप में विकास। इसके लिए जरूरी है कि समूची पाठ्यचर्या में भाषा उपागम के तहत अंग्रेजी, अन्य भाषाओं एवं विषयों के बीच की मेढ़ों को तोड़ा जाए (एनसीईआरटी, 2006, ख, पृ 5)। भाषा का शिक्षण जीवन की संपूर्णता लिए हुए हो न कि खण्डों में टूटन से भरा शिक्षण और सीखने का अनुभव देता हो। इस उदार एवं समग्र पद्धति की मांग होती है कि पाठ्यपुस्तकों की रचना इस दृष्टिकोण के साथ की जाए कि विषयवस्तु में पढ़ने वाले विद्यार्थियों का सांस्कृतिक सामाजिक परिवेश झलकता हो और अंग्रेजी उस संदर्भ में विचार एवं संवाद की भाषा की तरह उभरे। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 (एनसीईआरटी, 2006, क) के अनुसार, अंग्रेजी की पाठ्यपुस्तकों की विषयवस्तु ऐसी होनी चाहिए कि रोजमर्रा में आने वाली नई सामग्री उसमें शामिल हो और ऐसा न हो कि एक ही पाठ को रट-रट कर उसमें महारत हासिल की जा रही हो। शिक्षक और विद्यार्थी दोनों ही परिचित एवं अपरिचित पठनीय सामग्री निरंतर कक्षा में लाते रहें, जिससे कि अंग्रेजी सीखने का अनुभव असल जीवन से जुड़ा और सुखद महसूस होता रहे। विद्यार्थी प्रश्नों के उत्तरों और व्याकरण के नियमों पर आधारित जुमलों को रटने के बोझ तले दबे न रहें। राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान (एसआईईआरटी) ने वर्ष 2016 में नई पाठ्यपुस्तकों की रचना की है। प्रस्तुत लेख में इस शृंखला में आई अंग्रेजी पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण प्रस्तुत किया जा रहा है।

पहली से पांचवीं कक्षाओं की अंग्रेजी पाठ्यपुस्तकों में शिक्षकों के लिए एक पत्र हिंदी में दिया गया है। यह पत्र शिक्षकों से अंग्रेजी शिक्षण के मुद्दे पर एक संवाद स्थापित करने की कोशिश करता है। इस पत्र की भाषा हिंदी होना अपने-आप में एक रोचक विषय और विश्लेषण लायक मुद्दा है। मजेदार बात यह है कि इस पत्र से पहले राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान के निदेशक द्वारा संप्रेषित आमुख दिया गया है जो कि अंग्रेजी में है और हरेक पुस्तक में हूबहू मौजूद है। प्राथमिक कक्षाओं के शिक्षकों से निदेशक का आमुख अंग्रेजी में पढ़ने की उम्मीद रखी गई है, लेकिन अंग्रेजी के शिक्षण को लेकर लिखा गया पत्र - जो कि जाहिर है कि अंग्रेजी के शिक्षकों के लिए है - हिंदी में बेहतर समझे जाने की कल्पना दर्शाता है। इससे लेखकों के मन में आया संदेह जाहिर होता है कि प्राथमिक स्तर पर अंग्रेजी पढ़ाने वाले इस भाषा

का इस्तेमाल विचारों के आदान-प्रदान के लिए शायद न करते हों। कक्षा छठी से आठवीं तक की पुस्तकों में शिक्षकों के नाम पत्र अंग्रेजी में दिए गए हैं। प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षकों की विचार समझने की क्षमता को भाषा केंद्रित मानते हुए उनमें अंतर करना शिक्षा व्यवस्था की स्थापित ऊंच-नीच को हमारे सामने प्रस्तुत करता है। जो शिक्षक अंग्रेजी पढ़ाने की जिम्मेदारी के लायक है वही शिक्षक शिक्षण संबंधी मुद्दों को अंग्रेजी में समझ नहीं सकता- यह सोच, अटपटी, बेमानी एवं अपमानजनक है।

पहली कक्षा की अंग्रेजी पाठ्यपुस्तक

किसी भी भाषा में पढ़ना-लिखना सीखने की एक विद्यार्थी की शैक्षिक यात्रा कैसी होगी, इसका अंदाजा पहली कक्षा की पाठ्यपुस्तक से काफी हद तक लगाया जा सकता है। इसलिए प्रस्तुत लेख में पहली कक्षा की अंग्रेजी पाठ्यपुस्तक का विश्लेषण विशेष गहराई के साथ किया गया है। पहली कक्षा की पाठ्यपुस्तक में दस इकाइयां हैं जिनमें मुख्यतः कविताएं, चित्रों की नकल और लकीरें खींचने की गतिविधियां, अक्षर अभ्यास और चित्र मिलान की गतिविधियां दी गई हैं। पहले पाठ में छोटी-छोटी छः कविताएं दी गई हैं। एक दो को छोड़ दें तो अन्य सभी पाठों में शुरुआत में एक कविता दी गई है और साथ में उपरोक्त गतिविधियां। कुल मिला कर 18 कविताएं पहली कक्षा की पुस्तक में हैं, लेकिन एक भी कविता में राजस्थानी परिवेश की झलक नाममात्र को भी नहीं है। दो को छोड़कर सभी कविताएं नीरस, उबाऊ हैं और सतही स्तर पर उपदेश देने एवं बच्चों को कुछ न कुछ सिखा देने की पुरानी बीमारी से ग्रस्त हैं। उदाहरण के लिए, विभिन्न चीजों के लिए भगवान का धन्यवाद करना, भगवान का आर्शीवाद पाना, अंग्रेजी के अक्षर सीखना, समय पर स्कूल आना और प्रार्थना में जाना, शरीर के अंग, गणित की संख्या एवं सप्ताह के दिन। कविताओं की वाक्य-रचना एवं शब्दावली कृत्रिम है। कविताओं की भाषा में एक 6 साल के बच्चे के लिए जरूरी सहजता नहीं है। कविताओं को महत्वपूर्ण मानने के बावजूद पुस्तक के रचयिताओं ने बाल सुलभ एवं उपयुक्त कविताएं नहीं चुनी हैं। ऐसी कविताएं भाषा सीखने के लिए उपयोगी नहीं हो सकतीं क्योंकि अगर बच्चे इनको सहज भाव से मजा लेते हुए गा नहीं पाएंगे तो वे शब्द और वाक्य रचना भी नहीं सीख पाएंगे। कुछ कविताएं तो सही मायनों में बेतुकी हैं जिनमें गेयता है ही नहीं। हालांकि शिक्षकों को लिखे पत्र में कविताएं गाने पर जोर दिया गया है।

पहले पाठ के पहले पृष्ठ से ही पाठक सांदर्भिक शून्य महसूस करता है चाहे वह छोटा बच्चा हो या वयस्क। पुस्तक में शुरुआत से अंत तक राजस्थान के परिवेश पर आधारित कविता या चित्र नहीं दिए गए हैं। ऊंट पुस्तक के अंत में एक गतिविधि में दिखाई देता है जिसमें अंग्रेजी में प्रयुक्त किए जाने वाले 'आर्टिकल्स' यानि 'अ', ऐन, व 'द' में से पहले दो पर प्रश्न दिए गए हैं। राजस्थान की रेत, किले, पशु, खानपान न केवल कविताओं और गतिविधियों से बल्कि पुस्तक से ही नदारद हैं। जो दो कविताएं ठीक-ठाक कही जा सकती हैं वे जिराफ और हाथी के बारे में हैं। अक्सर इस स्तर पर पाठ्यपुस्तक समितियों के सामने चुनौती होती है कि 6 वर्ष के विद्यार्थी के लिए परिचित एवं अपरिचित जानकारी के बीच सामंजस्य कैसे बिठाएं। राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान द्वारा नियुक्त पहली कक्षा की अंग्रेजी पुस्तक की समिति ने न केवल इस चुनौती की उपेक्षा की बल्कि एक बेगाना भाषाई संसार बच्चे के सामने रचा है। इस पुस्तक से सबसे पहले जो महसूस होता है वह है कि अंग्रेजी अपनी जिंदगी के बारे में सोचने की भाषा नहीं है वरन् एक अलग दुनिया को जानने की भाषा है।

इस बेगानेपन को पुस्तक की विषयवस्तु एवं दिए गए चित्रों में बहुत ही गहन रूप से देखा जा सकता है। दरअसल, पुस्तक के लिए मौलिक चित्र तो बनवाए ही नहीं गए हैं। पूरी पुस्तक इंटरनेट से चुराए चित्रों से भरी पड़ी है। मौलिक चित्रकारी के नाम पर सिर्फ पृष्ठों के किनारे पर दी गई पट्टी है। उस पट्टी पर दिए गए चित्र भी निम्न कोटि के ही हैं जो कार्टून शैली में बनाए गए हैं और बिना किसी सार के इधर-उधर भर दिए गए हैं। चित्रों की भाषा-शिक्षण में संजीदा भूमिका होती है लेकिन अंग्रेजी की किसी भी पुस्तक में इस मुद्दे पर ध्यान नहीं दिया गया है। चित्रों पर पर इस दृष्टि से शायद विचार हुआ ही नहीं कि अंग्रेजी की पुस्तक में अपनापन जगाने के लिए उनकी अहम् भूमिका हो सकती है। चित्रों की शैक्षणिक प्रासंगिकता की कसौटी पर निर्बल समझ इस पुस्तक से जाहिर होती है। इकाइयों में दी गई सभी गतिविधियों में बच्चों से दिए गए चित्रों की नकल करने या उनमें रंग भरने के लिए कहा गया है। किसी

भी भाषा में संवाद और अभिव्यक्ति की इच्छा के विकास में चित्रों की भूमिका अग्रणी है। रूढ़ चित्र बनाकर या बने बनाए में रंग भरकर बच्चे अभिव्यक्ति के कौशल की तरफ कदम नहीं उठा सकते। उसके लिए जरूरी है कि बच्चों को लगातार यह चुनने की आजादी मिले कि उन्हें क्या बनाना है। ''चित्रकारी बच्चों के समग्र विकास में, और विशेषकर भाषा के प्रयोग और लेखन में योगदान देती है, बशर्ते कि बच्चे को चित्र-माध्यम में पैठने को पूरी तरह आजाद छोड़ दिया जाए'' (कुमार, 1996, पृ 52)। मुक्त भाव से चित्र बनाना छोटे बच्चे की मौलिक अभिव्यक्ति का पहला निमित्त होता है और इसलिए भाषा शिक्षण की किसी भी पाठ्य सामग्री में उसका स्थान अपरिहार्य है। ऐसा प्रतीत होता है कि राजस्थान की पहली कक्षा की अंग्रेजी पुस्तक की समिति के पास इस सैद्धांतिक समझ का अभाव है। साथ ही इस समिति की समझ में लेखन एक सोच समझकर किया जाने वाला काम न होकर अक्षर बनाने में दक्षता तक सीमित प्रतीत होता है। पुस्तक की प्रत्येक इकाई में बारम्बार लकीरें, गोले बनाने व अक्षर लिखने के अभ्यास हैं। लिखने की पढाई के मूलभूत सिद्वांतों की कसौटी पर तौलें तो पहली कक्षा की पुस्तक काफी कमजोर प्रतीत होती है। यह पुस्तक शिक्षक को लिखने की पढ़ाई की नवाचारी पद्धति के लिए प्रेरित करने में असमर्थ है।

पहली कक्षा की पाठ्यपुस्तक में अक्षर के मौखिक एवं लिखित अभ्यास की गतिविधियों की भरमार है, लेकिन कहानी एक भी नहीं है। छह वर्ष के बच्चों की पुस्तक से कहानी की अनुपस्थिति भाषाई शिक्षण के उसी रूढ़िबद्ध विचार को ठोस रूप देती है जिसके तहत माना जाता है कि जब तक अक्षर ज्ञान पूरा नहीं हो जाता, बच्चे पाठक नहीं बन सकते। हिन्दी, अन्य भारतीय भाषाओं एवं अंग्रेजी शिक्षण की दुर्दशा शायद इसी विचार के कारण सबसे ज्यादा हुई है। ऐसी पुस्तकों के कारण पढ़ना सीखने की तैयारी एक छोटे बच्चे के लिए इतनी निस्तेज साबित होती है कि वह पाठक बनने की यात्रा से शुरू में ही बाहर हो जाता है। अक्षर और शब्द दोहरान से लबालब पुस्तक राजस्थान के बच्चों को अंग्रेजी से जुड़ने न देने में काफी कारगर साबित होगी। पुस्तक के अंत में दी गई 155 शब्दों की सूची इस पुस्तक के बेगानेपन को सटीक रूप से प्रतिबिंबित करती है। उसमें से कुछ शब्द हैः quill, igloo, violin and yacht। राजस्थान में रहने वाले पांच साल के विद्यार्थी अंग्रेजी सीखने की शुरुआत अपने प्रतिवेश के बारे में बातचीत करके नहीं बल्कि एस्किमो की झोपड़ी का नाम रटते हुए करेंगे। यह पुस्तक अंग्रेजी को बच्चे के जीवन से फासले पर रखती है और उसे एक अन्य भाषा की तरह प्रस्तुत न करके यांत्रिक एवं निरर्थक कार्यों के संकलन के रूप में परोसती है। निरर्थक कार्यों से आशय है कि अंग्रेजी के अक्षरों को दर्जनों बार दोहराते रहने और न्यारी वस्तुओं के चित्र देखकर उनके नाम जोर-जोर से बोलते और लिखते रहने की कवायद। यहीं से वह मूलभूत समस्या शुरू हो जाती है जो बच्चे की प्रकृति से इन अभ्यासों का मेल न होने के कारण बनती है। मनोविज्ञान ने हमें सिखाया है कि बच्चे ऐसे काम करने में सक्षम होते हैं जिनका फल वे फौरन पा सकें। दूरगामी लाभ की उम्मीद छोटे बच्चों के लिए संज्ञानत्मक रूप से ग्राह्य नहीं होती इसलिए कुछेक को छोड़ कर अधिकतर को ऐसी गतिविधियां सीखने की एक ठोस एवं अटल वजह नहीं दे पातीं। निरर्थकता इस मायने में सबसे ज्यादा होती है कि अक्षर का कोई अर्थ नहीं होता। वह सिर्फ एक आकार है जिससे एक ध्वनि जुड़ी होती है। आकार, ध्वनि मिलान करते-करते बच्चे थक जाते हैं, कई बार तो याद रखने के बोझ से चुक जाते हैं। अंग्रेजी में याद रखी जाने के लिए 26 अक्षरों के बड़े आकार और उतने ही छोटे आकार। ग्रामीण परिवेश से आए बच्चे के लिए यह याद रखी जाने वाली सामग्री का पहाड़ बना देते हैं। एक 5-6 साल के बच्चे को 52 आकार और उनकी ध्वनियां याद करनी होती हैं और जो सरल से सरल शब्दों में भी हूबहू नहीं आतीं। अंग्रेजी की पुस्तक लिखने वालों की एक बात समान है चाहे वे भारत में कहीं भी हों कि वे पहला शब्द apple को चुनते हैं जिसमें a की ध्वनि ऐ की हो जाती है। इस बीमारी से राजस्थान की पुस्तक समिति भी ग्रस्त रही और इतनी ज्यादा कि गुरूजनों के पत्र में अंग्रेजी पढ़ाने की समस्याओं को apple से ही समझाया है। अंग्रेजी में शब्द बोलने के ढंग में अक्षर का उच्चारण हूबहू नहीं होता है। इसके बावजूद पुस्तक समिति ने 127 पृष्ठों में से 85, यानि 67 प्रतिशत जगह अक्षर बोलने या लिखने के काम को दी है। अक्षर को दी गई यह तवज्जो और इस तरह से कि कहानी को पुस्तक में बिल्कुल जगह न मिले, यही उस निराशा का कारण बनते आए हैं जिसके कारण बच्चे स्कूल से और अंग्रेजी से दूर हो जाते हैं। राजस्थान में भी यही होगा। हिन्दी एवं अंग्रेजी की पुस्तकों की पुरानी सारी समस्याओं को राजस्थान की पहली कक्षा की पुस्तक में बरकरार रखा गया है।

अंग्रेजी पुस्तकों की यह दुर्दशा 2016 में होना किसी को भी चौंकाता है क्योंकि पिछले दस सालों से हमारे पास राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 और उसके सहयोगी फोकस समूहों के पर्चों का विमर्श एवं ज्ञान है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या और अंग्रेजी शिक्षण के फोकस समूह की अनुशंसाओं पर अमल करते हुए एनसीईआरटी ने विशेष तौर पर ग्रामीण बच्चों के लिए अंग्रेजी पुस्तकों की एक शृंखला तैयार की जिसका नाम है 'रेनड्राप्स'। रेनड्राप्स शृंखला की अंग्रेजी पुस्तकें 2011 से उपलब्ध हैं। रेनड्राप्स में कहानियों और कविताओं को शुरू से ही जगह दी गई है और हरेक पाठ में विचार, वाक्य और शब्दों के सार्थक संदर्भ में आने के बाद बच्चों का ध्यान सीमित रूप से अक्षरों पर लाया गया है। राजस्थान की पहली कक्षा की पुस्तक इस शृंखला से प्रभावित प्रतीत होती है। पाठ सरंचना वैसी ही है, लेकिन कहानियां देने में कोताही, बच्चों के लिए अनुपयुक्त काविताओं, बेगाने संदर्भ और अक्षर अभ्यास की भरमार ने राजस्थान की पुस्तक को अकादमिक रूप से हल्का कर दिया है और वह बाल-सुलभ नहीं रह गई है।

प्राथमिक स्तर की अन्य पाठ्यपुस्तकें

कक्षा तीसरी से पांचवीं की पुस्तकों में जिस पहलू पर सबसे पहले नजर जाती है, वह है अंग्रेजी शब्दों के हिन्दी अर्थ देकर शब्द सिखाने का प्रयास। नीचे कक्षावार हिन्दी शब्दों की सूची दी गई है जिनकी मदद से प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों को अंग्रेजी तद्रूप सिखाने की कोशिश की गई हैः

तालिका 1 : प्राथमिक कक्षाओं की पुस्तकों में दिए गए शब्दार्थ

कक्षा एवं उम्र	अंग्रेजी शब्दों के हिन्दी अर्थ
कक्षा 3 उम्र 7–8 साल	परिवेश, यातायात बत्ती, पराक्रम शक्ति, खुशमिजाज, कचरापात्र, आशीर्वाद, परिचित, समझदारी, प्रतिध्वनि, धरोहर, निर्माण क्रिया, प्राचीन, स्वर्ग, प्रवासी, अभ्यारण्य, निपुणता, आज्ञाकारिता, उपलक्ष्य, अनुयायी, शानदार, मध्य रात्रि, मंद पवन, वृक्ष, षडयंत्र, पत्रकार, क्रांतिकारी, यातना, गिरफ्तार
कक्षा 4 उम्र 8–9 साल	व्यावहारिक, संचित, संग्रहित, आक्रमण, भयभीत, अशिष्ट, अनुयायी, प्रदर्शनी, जीवन्त, प्रौढ़, पशुधन, प्राणी, प्रजातियां, आर्द्रता युक्त, कुंज, प्रवाह, विक्रेता, घोषणा, रवानगी, सहकर्मी, विमान विज्ञान, यंत्रमानव शास्त्र, विशेषज्ञ, अदृश्य, त्याग, नरसंहार, निर्दयतापूर्वक, प्रारंभ, व्यवहार, गणना, धरातल, तलहटी, शांतिप्रद, सावधानीपूर्वक, मनोहर, आयोजन, चर्चा, विचार विमर्श, पर्यावरण, जागरूकता, ग्रह, समृद्धिशाली, वैभवशाली, स्वदेश, मातृभूमि, अरुचिकर, स्नेहहीन, भावहीन, सर्वश्रेष्ठ, आत्मीयता, स्नेहशील
कक्षा 5 उम्र 9–10 साल	भयभीत, शांति (युद्ध के बाद वाली), जिज्ञासा, विस्तार, प्राथमिकता, शांतिपूर्वक, नष्ट, वादा, आरोप, प्रचुर, सुव्यवस्थित, अपहरण, अभिनीत करना, विस्फोटित, अव्यवस्थित, पूर्ण, धधकता, यात्री ,प्रभावित, शपथ, दुष्प्रभाव, भुखमरी, विचित्र, संग्रह, स्तंभ, समर्पित, भक्त, मित्रवत उपस्थिति, आंदोलन, घोषणा, आंदोलनकारी, संचालन, स्थापित, विरोध, अभियान, औपनिवेशिक, मूर्छित, प्रहार, अन्यायपूर्ण, धैर्यहीन, आध्यात्मिक, दयनीय

तालिका 1 में दिए गए शब्दों पर नजर डालें तो हम पाते हैं कि ये केवल इसलिए कठिन नहीं हैं क्योंकि इनकी वर्तनी कठिन है या बच्चे के अनुभव जगत के दायरे से बाहर हैं। शब्दों की कठिनाई का असल आभास हमें पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत से होता है। प्राथमिक स्तर की कक्षाओं में बच्चों की उम्र 5 से 10 साल होती है। इस उम्र में बच्चे अमूर्त अवधारणाओं की समझ नहीं बना सकते। यह क्षमता तो किशोरावस्था में आनी शूरू होती है। दरअसल अमूर्त क्षमताओं का विकास शुरू होने को किशोरावस्था का सबसे बड़ा सूचक माना जाता है (पियाजे एवं इनहैल्डर, 1958)। अमूर्त अवधारणाओं की समझ की क्षमता के बिना बच्चा भावहीन, स्नेहहीन, षडयंत्र जैसे शब्दों की मदद से अंग्रेजी का विचार कैसे जान सकता है? यह विचार इन पुस्तकों की समिति सदस्यों के मन में नहीं कौंधा। इन शब्दों के चयन पर समझ बनाने के लिए हमें स्कूली हिन्दी और जीवन जीने के लिए बोली जा रही कई तरह की हिन्दी के बीच चल रहे द्वंद्व को यहां याद करना होगा। अफसरी भाषा में राजस्थान एक हिंदी भाषी क्षेत्र माना जाता है, लेकिन बच्चों के घर में बोली जा रही भाषा स्कूल की औपचारिक हिन्दी से वस्तुतः भिन्न होती है।

उसको इस्तेमाल किए बिना अंग्रेजी सिखा पाना असंभव है। इस सूची से एक और बात हमारे संज्ञान में आती है कि सिर्फ विषय का ज्ञान और बच्चों को पढ़ाने का अनुभव एक अच्छी पुस्तक की रचना के लिए पर्याप्त नहीं हैं। पुस्तक समिति को भाषा शिक्षण के मनोवैज्ञानिक एवं समाजशास्त्रीय मुद्दों की गहरी समझ होनी चाहिए।

कुमार (2001) के अनुसार, चाहे वह कविता हो, कहानी हो, लेख या एकांकी हो, हर रचना हिन्दी की पाठ्यपुस्तक के लिए चुनी ही इस आधार पर जाती है कि उसमें स्वीकृत बातें बोल देने के अवसर कक्षा में जुटाने की क्षमता कितनी है। जो बिंदु लेखक ने हिन्दी के संदर्भ में व्यक्त किया है, वह अंग्रेजी की पाठ्यपुस्तकों पर भी पूर्ण रूप से लागू होता है। दरअसल, यह सभी भारतीय भाषाओं की पुस्तकों पर लागू होता है। भाषा की पुस्तकों को बच्चों को उपदेश देने का मंच मान लिया जाता है और वयस्कों के सभी सारोकार पाठ के रूप में प्रस्तुत किए जाते हैं। प्राथमिक स्तर की सभी पुस्तकों में यह मानसिकता जाहिर होती है। जिन विषयों को इस्तेमाल करके कविताओं, नाटकों, निबंधों और कहानियों को चुना या लिखा गया है, उनकी सूची तालिका 2 में कक्षावार दी गई है।

तालिका 2 : कविताओं, नाटकों, निबंधों और कहानियों के विषय

कक्षा	विषयों की श्रेणीवार सूची				
	उपदेशात्मक	साहित्य	राजस्थान की धरोहर एवं गौरव तथा देश की महिमा	सरकार की समस्याएं।	जानकारी
3	मन लगा कर काम करते रहना, वृद्ध लोगों की मदद करना, अच्छी आदतें, मां को निश्छल भाव से प्रेम करना (4)	पंचतंत्र की कहानी, (1)	चारभुजानाथ मंदिर, भरतपुर चिड़िया अभ्यारण्य, छत्रपति शिवाजी (3)	स्वच्छ भारत अभियान, लड़कियों की इज्जत करना, वृक्ष सरंक्षण, वातावरण, यातायात बत्ती (5)	
4	धन्यवाद करते हुए प्रार्थना, जानवरों के प्रति दया (2)	आम खा जाने वाला चतुर नौकर रामू, पहाड़ी के तल में बसा गांव, बदबूदार सांस वाला शेर (3)	राजस्थान के अपंग खिलाड़ी देवेन्द्र झाझरिया, राजस्थान की बहादुर जनजातीय लड़की, पुष्कर का ऊंट मेला, गोविन्द गुरू के नेतृत्व में मनगढ़ धाम, राजस्थान में हुआ जन जातीय लोगों का नरसंहार,मातृभूमि (5)	पानी बचाओ, रेलवे स्टेशन को साफ रखना, वायु प्रदूषण, पर्यावरण संरक्षण (4)	कल्पना चावला, राष्ट्रीय पक्षी मोर, नींबू पानी (3)
5	प्राणायाम के फायदे, स्कूल एक मंदिर, पढ़ाई न करने वाला बच्चा, बात करने के नुकसान (4)		दशहरा, चित्तौड़गढ़ का किला, जुगनू, गुरूभक्त लड़की (4)	सफाई का महत्व, तम्बाकू न खाना (2)	रंग (1)
6	मेहनत का फल, शब्दों का महत्व (2)		महाराणा प्रताप, राजस्थान की राजधानी जयपुर, राजस्थान के लोक नृत्य, मातृभूमि के लिए पन्ना धाय का बलिदान, आषाढ़ का मेला (5)	स्वास्थ्य एवं सफाई, स्मार्ट गांव, स्वच्छ भारत में बच्चों की भूमिका, आग लगने की आपदा, सड़क पर सुरक्षा, बैंक में खाता खोलना (6)	कम्प्यूटर, जानवरों के घर (2)
7	सपनों का स्कूल, मेरा परम मित्र, एक लड़के की कम्प्यूटर पर चूहे मारने का खेल खेलने की बुरी आदत, गरीबों के प्रति दया, हितोपदेश की कथा जिसमें राजा अपने लिए एक ईमानदार वारिस चुनता है (5)	एक विद्यार्थी और कैंटीन मालिक का वार्तालाप, मुस्कुराहट, टैगोर की कविता जिसमें भिखारी से मांगने भगवान आ जाते हैं (3)	1737 में बिशनोई लोगों द्वारा पेड़ काटने के विरोध में किया गया बलिदान, रणथंभोर का चीता पार्क बनाने वाले और राजस्थान के रहने वाले फतेह सिंह राठौर, राजस्थान के ऐतिहासिक जगहों की यात्रा और सांस्कृतिक धरोहर, प्राचीन भारतीय विज्ञान (4)	कचरे को कम करने की जरूरत, अपंग बच्चों का स्कूल आना, गुटका चबाने पर आधारित नरेंद्र मोदी द्वारा रेडियो पर की गई मन की बात (3)	
8	बच्चों द्वारा सर्कस के जानवरों पर किए गए अत्याचार, एक मां द्वारा कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय में पढ़ रही उसकी बेटी को नसीहतों भरा पत्र (2)	विवेकानंद की आत्मा की आजादी पर कविता, टैगोर की कविताः जहां गर्व से सिर उठे हों, टैगोर का नाटक कर्ल्यू टापू (3)	चित्तौड़ के ऐतिहासिक स्थल, राजस्थान में पैदा हुए चित्रकार सुदीप सिंह की गरीब परिवार में 16 भाई बहनों के साथ पलने और जयपुर जाने की कहानी, राजस्थान की बहादुर बेनाम औरत जिसने बहुत सारे अंग्रेज सैनिकों को जहर भरा खाना खिला के मार दिया और खुद भी मर गई, राजस्थान की कीर्ति, चाणक्य (5)	पैर से अपंग संगीता नामक लड़की की बहादुरी की कहानी, बैंक जाना, जल प्रदूषण एवं संरक्षण, पेडों का काटा जाना (3)	कम्प्यूटर (1)

> ***एक कहानी में नौकर का नाम श्यामू है। नौकर के नाम के आखिरी अक्षर में बड़े 'ऊ' की मात्रा बडी गहरी द्योतक है। इस तरह के पाठों की जड़ में यही सोच होती है कि गरीब नौकर धूर्त होते हैं जो अपने भोले-भाले अमीर मालिक को बर्गला लेते हैं और धोखा देते हैं। राजस्थान की पुस्तक समिति इस बीमारी से बच नहीं पाई भले ही वह अंग्रेजी में लिख रही थी। गरीबों को समस्या की तरह देखना और उसी पर पाठ बनाकर सरकारी स्कूलों में आने वाले गरीब बच्चों को पढ़ाना न केवल बौद्धिक गरीबी को झलकाता है बल्कि इस बात से अनभिज्ञता को भी कि यह बच्चों की तौहीन है।***

तालिका 2 की पांच श्रेणियों पर नजर डालते ही इन पुस्तकों की विषयवस्तु के चयन या लेखन पर हावी विचारधारा का एहसास हो जाता है। अंग्रेजी पढ़ाना तो दरअसल एक अकादमिक बहाना भर है। अंग्रेजी की पुस्तकों को एक जरिया मानते हुए जो बच्चों तक पहुंचाने की कोशिश की गई है, वह हैः राजस्थान की पर्यटन संबंधी जानकारी, सरकार की समस्याओं और हाल में चल रही परियोजनाओं का बखान एवं पुरानी सनक यानि उपदेश। पुस्तक के पन्ने पलटते समय बार-बार लगता रहता है कि ये अंग्रेजी भाषा की बच्चों की किताब न होकर पर्यटन, प्रौढ़ शिक्षा एवं सरकारी परियोजनाओं की जानकारी का पर्चा है जिसमें भाषाई और साहित्यिक लेख बीच-बीच में विराम लगाने के लिए डाल दिए गए हैं। टैगोर और विवेकानंद की कुल जमा तीन कृतियों को छोड़ दें तो पाठ न केवल हल्के स्तर के बल्कि भौंडे हैं। पाठ किसी भी विधा में रचा गया हो, उसकी भाषा और संरचना बेडौल है। पढ़ते समय ऐसा प्रतीत होता है कि बस बता देने भर के लिए कुछ पंक्तियां जुटा दी गई हैं। उदाहरण के लिए, देवेन्द्र झाझरिया का 1981 में पैदा होना, 1989 में पैर खो देना और 2002 में कोरिया में एक स्वर्ण पदक जीतना, यह 21 साल की जीवन यात्रा पांच पंक्तियों में पूरी हो गई है। जब तक चौथी कक्षा के पाठक को इस बात का बोध हो पाए कि आठ साल की उम्र में देवेन्द्र का पैर कट गया, पाठ में उनके अंतर्राष्ट्रीय ईनामों की लंबी सूची खत्म हो चुकी होती है। ऐसा प्रतीत होता है कि पैर कटने से देवेन्द्र के सामने कोई समस्या नहीं आई, न जिन्दगी में और न ही खिलाड़ी बनने में। साहित्यिक भाषा का गुण होता है कि वह छोटे से छोटे अनुभव की गहराइयों को इस तरह प्रस्तुत करती है कि बाल पाठक भी देवेन्द्र के मर्म को महसूस कर ले। इस कसौटी पर पहली से आठवीं तक की अंग्रेजी की सभी पुस्तकें निराशा पैदा करती हैं।

राजस्थान के एतिहासिक स्थलों के पाठ की विषयवस्तु सरकारी प्रचारों से भी ज्यादा भौंडी और बेतुकी है। इससे तो बेहतर होता कि पर्यटन विभाग एवं पर्यटन का काम कर रही निजी कंपनियों द्वारा विकसित पठन सामग्री को पाठ के रूप में इस्तेमाल कर लेते। उस सामग्री को पढ़कर फिर भी राजस्थान की सुंदरता और आकर्षण महसूस हो जाता। मौजूदा पाठों की नीरसता और जिंदगी से जुदा भाषा तो राजस्थान के आकर्षण पर पानी डाल देती हैं। जिन पाठों में सरकारी समस्याओं का जिक्र है, उनमें सरकारी अधीरता भी है कि जल्दी से सब ठीक हो जाए। भले ही हम खास काम करें न करें, परिस्थितियां और लोग बदल जाएं। एक पाठ में 15-20 पंक्तियां पढ़ते ही पात्र शपथ ले लेते हैं कि वे तंबाकू का सेवन कभी नहीं करेंगे। सन् 1737 में बिशनोई महिला ने पेड़ों को कटने से बचाने के लिए अपने हाथ-पैर कटवा दिए थे। इस वाक्य पर कक्षा सात की पुस्तक में दिए गए पाठ में लेखकों ने एक भी वाक्य इस पर खर्च नहीं किया है कि जब उनके हाथ-पैर कट गए तो काटने वाले सैनिक को कैसा लगा और उस महिला का क्या हुआ। राष्ट्रवादी विमर्श में डूबे लेखक भूल गए कि जब तक उसके दर्द को शब्दों में प्रस्तुत नहीं करेंगे तब तक बच्चों को उसके बलिदान का एहसास ही नहीं होगा। हरेक पुस्तक का हेरक पाठ भागता हुआ महसूस होता है जिसमें थोडा ठहरकर बच्चों से इस्तेमाल संदर्भ के सहारे अंग्रेजी में विमर्श की संभावना एवं गुंजाइश है ही नहीं।

अंग्रेजी शासन से उपजा भारत के गरीबों के लिए एक अपमानजनक घिसा-पिटा नजरिया अक्सर पाठ्यपुस्तकों में देखने को मिलता है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 ने इस मुद्दे पर गहन चर्चा प्रस्तुत की थी और उसके तहत विकसित की गई पुस्तकों में इस बात का विशेष खयाल रखा गया था। राजस्थान की पुस्तकों में कचरा संबंधी पाठ तो उस नजरिए से उपजे दिखाई देते ही हैं, कई अन्य साक्ष्य भी मिलते हैं। जैसे कि, शिक्षक का नाम - मिस्टर शर्मा है और गरीब माता-पिता का नाम मंगू, सुगन और जानकी लाल है। एक कहानी में नौकर का नाम श्यामू है। नौकर के नाम के आखिरी अक्षर में बड़े 'ऊ' की मात्रा बडी गहरी द्योतक है। इस तरह के पाठों की जड़ में यही सोच होती है कि गरीब नौकर धूर्त होते हैं जो अपने भोले-भाले अमीर मालिक को बर्गला लेते हैं और धोखा देते हैं। राजस्थान

की पुस्तक समिति इस बीमारी से बच नहीं पाई भले ही वह अंग्रेजी में लिख रही थी। गरीबों को समस्या की तरह देखना और उसी पर पाठ बनाकर सरकारी स्कूलों में आने वाले गरीब बच्चों को पढ़ाना न केवल बौद्धिक गरीबी को झलकाता है बल्कि इस बात से अनभिज्ञता को भी कि यह बच्चों की तौहीन है। पिछले दो दशकों में शैक्षिक सिद्धांत के विषय में जितने भी समाजशास्त्रीय सरोकार पहचाने गए हैं, उनसे अंग्रेजी पुस्तक समितियों के सदस्य कोसों दूरी बनाए प्रतीत होते हैं।

हरेक पुस्तक के ढांचे को देखें तो एक न्यूरौटिक संरचना दिखाई देती है। एक पाठ राजस्थान के वैभव पर आता है तो अगला ही पाठ तंबाकू सेवन के दुष्प्रभावों या कचरे पर आ जाता है। एक पाठ अपंग बच्चों के साहस पर आता है तो दूसरा प्राचीन भारत में मौजूद विज्ञान की समझ पर, जिसकी विषयवस्तु दिल्ली के अक्षरधाम मंदिर में इसी विषय पर दिखाई जाने वाली चल-प्रदर्शनी के कथानक से मिलती-जुलती है। साहित्य का मर्म होता है शब्दों की मदद से परिचित और अपरिचित अनुभव में गहराई लाना, सोचने और विश्लेषण के लिए नजरिए देना, जिन्दगी के मामूली प्रसंगों के लिए भी उत्साह एवं जोश भर देना। राजस्थान की अंग्रेजी पुस्तकों में ऐसा कुछ भी नहीं है। वे नीरस, उबाऊ एवं अनाकर्षक हैं। ये पुस्तकें अंग्रेजी सिखाने में विफल और बच्चों को आज की दुनिया की महत्वपूर्ण भाषा से दूर रखने में अत्यंत कामयाब रहेंगीं। ◆

संदर्भ

1. एनसीईआरटी, क; 2006 पोजीशन पेपर ऑफ द नेशनल फोकस ग्रुप ऑन टीचिंग ऑफ इंग्लिश। एनसीईआरटीः दिल्ली
2. एनसीईआरटी, ख 2006; राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005, एनसीईआरटी, दिल्ली
3. कुमार, कृष्ण, 1996, बच्चे की भाषा और अध्यापक। नेशनल बुक ट्रस्टः दिल्ली
4. कुमार, कृष्ण, 2001; स्कूल की हिन्दी। राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
5. पियाजे, जे एवं इनहैल्डर, बी, 1958 द ग्रोथ आफ लॅजिक फ्राम चाइल्डहुड टू अडोलोसैंस।बेसिक बुक्सः न्यूयार्क

लेखिका परिचय : प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण की कई परियोजनाओं में सक्रिय भूमिका निभाई है। लड़कियों की अस्मिता के संदर्भ में धर्म और लिंग भाव के संबंधों पर शोध किया है। एन.सी.ई.आर.टी. से प्रकाशित क्रमिक पुस्तकमाला 'बरखा' की समन्वयक रही हैं। वर्तमान में दिल्ली विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग में पढ़ाती हैं।